आगन्तुज व्रण या सद्यः व्रण

* आगन्तुज या आघातज व्रण, ऐसे व्रण हैं जो 7 दिन पश्चात दोषज या निज व्रणों में परिवर्तित हो जाते हैं। ये व्रण बाह्यकारणों से उत्पन्न होते हैं इन्हे सद्यः व्रण भी कहते हैं।

सद्यः या आगन्तुज व्रण के भेद ⇒ (6)

(1) छिन्न व्रण (Excised) (2) भिन्न व्रण (Incised wound)

(3) विद्ध व्रण (Punctured wound) (4) पिच्चित व्रण (Compressed wound)

(5) क्षत व्रण (Partially Excised & Partially Incised) (6) घृष्ट व्रण (Lacerated wound)

आगन्तुज व्रण के हेतु ⇒ (1) तीक्ष्ण मुख वाले शस्त्रों के आघात से या डण्डे सदृश्य कुण्ठित वस्तु के प्रहार से (Trauma) उत्पन्न।

(2) हिंस्रक पशु पक्षियों के काटने (Bites) से उत्पन्न।

(3) अग्नि, क्षार, विष या तीक्ष्ण पदार्थों (Heat, Chemicals, Caustics, Acids, Poisons etc.) के सम्पर्क में आने से।

उपरोक्त कारणों से 6 प्रकार के आगन्तुज/आघातज या सद्यः व्रण की उत्पत्ति होती है।

" छिन्नं भिन्नं तथा विद्धं क्षतं पिच्चितमेव च।
घृष्टमाहुस्तथा षष्ठं तेषां वक्ष्यामि लक्षणम्॥ (सु॰ चि॰ 2)

प्रशस्त व्रण (वैद्यकृत व्रण) ⇒

" आयतश्च विशालश्च सुविभक्तो निराश्रयः।" (सु॰ सू॰ 5)

Scanned with CamScanner

(#) आगन्तुज व्रण के लक्षण ⇒ व्रण भेदानुसार

(1) छिन्न व्रण के लक्षण ⇒ आघातज व्रण में शरीर से धातुओं के पृथक हो जाने को छिन्न व्रण कहते हैं। ये व्रण सीधे, तिरछे या आयताकार होते हैं। छिन्नव्रण में आघातज अङ्ग विच्छेद भी हो सकता है।

(2) भिन्न व्रण के लक्षण ⇒ किसी तीक्ष्णधार शस्त्र से या नुकीले-पदार्थ (सींग, भाला इत्यादि) से किसी आशय (आमाशय, पक्वाशय, रुधिराशय, मूत्राशय इत्यादि) पर आघात होने से जो व्रण बनता है, उसे भिन्न व्रण कहते हैं। आशय के भिन्न होने पर, वह रक्त से भर जाता है तथा अनेक प्रकार के लक्षण उत्पन्न होते हैं जैसे- ज्वर, दाह, मूर्च्छा, श्वास, तृष्णा, स्वेद, आध्मान, हृदय या पार्श्व में शूल, गुदा या मूत्रमार्ग से रक्तस्त्राव, नेत्रों में रक्तिमा (लालिमा), एवं मुख तथा शरीर से रक्त की गन्ध का आना इत्यादि।
(It is a Visceral wound (Deep wound))

(3) विद्ध व्रण के लक्षण ⇒ तीक्ष्ण मुखवाले शस्त्र से आशय के अतिरिक्त शरीर के किसी अन्य भाग में आघात होने पर जो व्रण बनता है उसे विद्ध व्रण कहते हैं।
शल्यरहित व्रण को विद्ध व्रण की संज्ञा दी गई है। अष्टांग संग्रहकार ने विद्धव्रण के ⑧ भेद बताये हैं-

(1) अनुविद्ध (5) अनुभिन्न

(2) अतुण्डित (6) भिन्नोतुण्डित

(3) अतिविद्ध (7) अतिभिन्न

(4) निर्विद्ध (8) निर्भिन्न

"To succeed in your mission, you must have single-minded devotion to your goal." —A. P. J. Abdul Kalam

Scanned with CamScanner

(4) पिच्चित व्रण के लक्षण ⇒ कुण्ठित वस्तु के प्रहार से तथा अंग के दब जाने से व्रण अस्थिसहित चौड़ा हो जाता है तथा इसमें मज्जा एवं रक्त भर जाता है। ऐसे व्रण को पिच्चित व्रण कहते हैं। यह दो प्रकार का होता है।

(i) सव्रण पिच्चित ⇒ इसमें अंग पिच्चित हो जाता है तथा साथ में त्वचा पर भी व्रण बन जाता है। इस कारण से घृष्ट व्रण के समान इसमें दाह एवं पाक होता है।

(ii) अव्रण पिच्चित ⇒ इसमें अंग पिच्चित हो जाता है किन्तु त्वचा व्रण रहित रहती है।

(5) क्षत व्रण के लक्षण ⇒ ऐसा व्रण जो अधिक भिन्न न हुआ हो अर्थात् आशय के भिन्न व्रण की तरह उसकी भित्ति पूर्ण रूप से न कटी हो, उसे क्षत व्रण कहते हैं। यह थोड़ा भिन्न तथा थोड़ा छिन्न होने पर विषम व्रण बन जाता है। (आचार्य डल्हण ने इसे उन्नत या निम्न विषम व्रण कहा है।)

(6) घृष्ट व्रण के लक्षण ⇒ जब किसी कारण से आघात या रगड़ लगने से व्रण केवल त्वचा पर होता है। तब इसे घृष्ट व्रण कहते हैं। इसमें से सीरमी स्त्राव निकलता है तथा दाह एवं पाक होता है। यह सीरमी स्त्राव पानी के समान पतला, आमगन्धयुक्त तथा पीले वर्ण का होता है।

* साध्यासाध्यता ⇒ "स्वमार्गप्रतिपन्नास्तु यस्य विण्मूत्रमारुता।

साध्यता ⇒ व्युपद्रवः स भिन्नेऽपि कोष्ठे जीवति मानवः॥"

(सु॰चि॰ 2/55)

अर्थात् कोष्ठ के विदीर्ण होने पर यदि रोगी के मलमूत्र एवं वायु का अवरोध न हुआ हो तथा रोगी स्तब्धता के लक्षणों से रहित हो। तब रोगी जीवित रहता है अर्थात् रोग साध्य होता है।

"Words which do not give the light of Christ increase the darkness."—Mother Teresa

Scanned with CamScanner

Date __/__/____ Page No.: _____

असाध्यता ⇒ विद्ध व्रण के कारण यदि आशय रक्त से भर जाये, रोगी को अधिक स्वेद आये, हाथ-पैर ठंडे हो जायें, शरीर पीला पड़ जाये, आध्मान होने लगे, मलमूत्र का अवरोध होने लगे तथा मूर्च्छा, उच्छ्वास जैसे उपद्रव उत्पन्न होने लगें (अर्थात् आन्त्राघात तथा स्तब्धता होने लगे), तब ऐसे व्रण को असाध्य समझना चाहिये।

" कोष्ठभिन्ने रक्तपूर्णे ज्वरो दाहश्च जायते।
मूत्रमार्गगुदास्येभ्यो रक्तं घ्राणच्च गच्छति।
मूर्च्छश्वासतृडाध्मानमभक्तच्छन्द एव च।
विण्मूत्रवातसङ्गश्च स्वेदास्त्रावोऽक्षिरक्तता॥ (सु०चि० 2/13)

इन सभी के अतिरिक्त आशय संबंधी असाध्य स्त्राव निम्हैं।

(1) पुलकोदक के समान - पक्वाशय से
(2) क्षारोदक के समान - रक्ताशय से
(3) मटर के पानी के समान - आमाशय एवं त्रिक से

सभी असाध्य व्रण स्त्राव हैं।

आगन्तुज व्रणों की चिकित्सा ⇒

* वेदना होने पर ⇒ छिन्न, भिन्न, विद्ध तथा क्षत इनचारों प्रकार के व्रणों में रक्तस्त्राव अधिक होने से वायु प्रकुपित होती है। जिस कारण वेदना अधिक होती है। वेदना शांत करने के लिये रोगी को स्नेहपान करायें, कोष्ठा घृत या तैल (बला तैल) से परिषेक करें। स्निग्ध आलेप से कोष्ठ को सेक दें तथा रास्नादि वातनाशक औषधियों से सिद्ध स्नेहों की वस्ति दें।

Scanned with CamScanner